"APPENDIX.No.III.".

Gift-Deed of Purusottama. (From Veṇunāda Vol. I. No. 3)

॥ श्री हरिर्जयति ॥

संवत् १७८१ वर्षे द्वितीयाषाढ सुदी १० गुरौ दिने गुंसाइं पुरुषोत्तमजी मुरलीधरजीसुत विठ्ठलेशजीके पौत्र योग्य लिखितं गुंसाइं पुरुषोत्तमजी पीतांबरजीसुत यदुपतिजीके पौत्र यत् में अपनी आरोग्यतामें अपनी इच्छातें जो वस्तु मेरी हती सो दीनी इनकों, ताकी विगत. श्रीबालकृष्णजी तथा श्रीव्रजेश्वरजी तथा ओर ठाकुरजी हैं सो तथा श्रीगुंसाइंजीकी पादुका तथा चरणारविंद तथा ठाकुरके आभरणपात्र तथा हवेली मालमिलकत तथा यत्किंचित् वस्तु जो है सो सब में सुरति मध्ये दियो, यामें काहूको सर संबंध नाही.

१. अत्र मतं
लिखितं पुरुषोत्तमजी
पीतांबरजीसुत यदुपतिजीके
पौत्र. में अपना हस्ताक्षरसों
ऊपर लिख्यो सो सही."

तत्र साक्षिण:
१. लिखितं श्रीवल्लभजी
श्रीविठ्ठलरायजीसुत
ऊपरको लिख्यो सही.
१. लिखितं श्रीवल्लभात्मज.
मुरलीधरजी. ऊपर
लिख्यो सही.
१. अत्र साक्षी श्रीकल्याण-
रायजीसुत श्रीव्रजपालजी.

There are many other witnesses also.